

डॉ. मार्क जेनिंग्स, मार्क, व्याख्यान 10, मरकुस 5:21-6:6, याईर की बेटी, घर में अस्वीकृति

© 2024 मार्क जेनिंग्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 10 है, मार्क 5:21-6:6, जैरस की बेटी, घर पर अस्वीकृति।

हम मार्क अध्याय 5 में आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन ऐसा करने से पहले, मैं मार्क अध्याय 5, श्लोक 1 से 20 के सेना राक्षसी प्रकरण के साथ मार्क के सुसमाचार में अन्यजातियों के बारे में एक संक्षिप्त नोट देने का थोड़ा मौका लेना चाहता हूँ।

यह मार्क के सुसमाचार में एक गैर-यहूदी के साथ हमारी पहली बातचीत थी, और शायद यह हमें यह बताने का एक अच्छा अवसर है कि सुसमाचार में गैर-यहूदी कैसे काम करते हैं। केली इवरसन ने एक किताब लिखी है जिसका नाम है इवन द डॉग्स अंडर द टेबल, जिसमें वह गैर-यहूदी चरित्रों, या चरित्र समूहों का पता लगाती है, और गैर-यहूदियों के साथ संभावित रूप से 11 संकेत हैं। एक, समुद्र के किनारे की भीड़ मार्क अध्याय 3 में हो सकती है, गेरिज़िम राक्षसी, जिसे हमने अभी मार्क अध्याय 5 में देखा है, मार्क 7 में सीरोफ़ोनीशियन महिला, मार्क 7 में उसके ठीक बाद बहरा आदमी, मार्क 8 में 4,000 लोगों को खाना खिलाना, मार्क 8 में बाद में अंधा आदमी, मार्क 9 में राक्षस-प्रस्त बेटे के साथ पिता, निश्चित रूप से पिलातुस, सैनिक, क्रॉस पर रोमन सैनिक, साइरेन का साइमन, और फिर अंत में सेंचुरियन।

वे गैर-यहूदी हैं जो कहानी में आते हैं। इनमें से प्रत्येक मुठभेड़ अद्वितीय है। यहां तक कि उन लोगों में भी जहां यीशु एक समान कार्य करते हैं, स्थानिक और लौकिक रूप से स्पष्ट रूप से अंतर हैं, और शीर्षक विवरण हैं जो दिखाते हैं कि ये एक ही कहानी नहीं हैं।

दिलचस्प बात यह है कि कोई भी दो एपिसोड बिल्कुल एक जैसे नहीं हैं। एक गैर-यहूदी चरित्र को बाद में कथा में दोबारा नहीं दिखाया गया। हमारे पास 12, धार्मिक नेता और प्रेरित हैं जो पूरे समय दिखाई देते हैं, लेकिन एक गैर-यहूदी एपिसोड अलग-थलग लगता है।

मुझे लगता है कि एक बात दिलचस्प है, इस विचार से आगे बढ़ते हुए कि मार्क अपने सुसमाचार में क्या डालता है, वह यह है कि मार्क के अपने गैर-यहूदी चरित्रों की प्रस्तुति में कुछ एकरूपता या कम से कम समानता है। दूसरे शब्दों में, वह उन्हें बहुत ही समान तरीके से प्रस्तुत करता है, हालांकि रूढ़िवादी तरीके से नहीं। वे निश्चित रूप से व्यक्तिगत हैं, लेकिन गैर-यहूदियों की विशिष्ट प्रस्तुति सकारात्मक है।

ऐसा विशेष रूप से नहीं, लेकिन सामान्य तौर पर, उन्हें सकारात्मक प्रकाश में प्रस्तुत किया जाता है। यहां तक कि जब आप पिलातुस के बारे में सोचते हैं, तो मार्क के सुसमाचार में पिलातुस की प्रस्तुति कुछ अन्य सुसमाचारों की तुलना में थोड़ी अधिक सकारात्मक है। गैर-यहूदी अक्सर

किसी न किसी रूप में हताशा का कुछ रूप दिखाते हैं, किसी प्रकार की ज़रूरत जिसे यीशु पूरा करना चाहता है।

शायद यह बीमारी, रोग, दुष्टात्मा का कब्ज़ा या अन्य शारीरिक बीमारियाँ हैं। दूसरे शब्दों में, मार्क ने अन्यजातियों को यहूदियों की तरह ही समस्याओं से ग्रस्त दिखाया है, कभी-कभी शायद अधिक गंभीरता से भी। यदि आप उस दुष्टात्मा के बारे में सोचते हैं जिसके बारे में हमने अभी बात की है।

अध्याय 9 में दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के का वर्णन है, शिष्य इसका प्रयोग नहीं कर सकते, हालाँकि उन्हें अन्य स्थितियों में कुछ सफलता मिली थी। यह दुष्टात्मा की गंभीरता का संकेत हो सकता है। आपके पास यह गैर-यहूदी है, वह भीड़ जो अध्याय 8 में तीन दिनों तक यीशु का अनुसरण करती रही। सीरोफोनीशियन महिला, बहरा आदमी, अंधा आदमी, वे सभी हताश हैं।

एक तरह से, उनकी हताशा भी उद्धार की गहरी ज़रूरत के लिए है। हम अन्यजातियों में विश्वास देखते हैं। सुसमाचार में कई अन्यजातियों के लोगों में विश्वास की भावना पाई जाती है, दोनों ही तरह से, क्रिया और कर्म में।

दूसरे शब्दों में आप अन्यजातियों की प्रतिक्रिया देखते हैं जो कुछ यहूदियों की प्रतिक्रिया से बहुत मिलती-जुलती है, और अक्सर कई यहूदियों, खास तौर पर यहूदी नेतृत्व, के विपरीत होती है जो यीशु को अस्वीकार करते हैं। एक समझ है, अन्यजातियों ने राज्य के रहस्यों के बारे में कुछ समझ दिखाई है। उदाहरण के लिए, सीरोफोनीशियन महिला एकमात्र ऐसी पात्र है जिसने यीशु के दृष्टांतों में से एक को बिना समझाए सुना और समझा।

वह समझती है कि गैर-यहूदियों को परमेश्वर के उद्देश्यों से बाहर नहीं रखा गया है, हालाँकि यहूदियों को प्राथमिकता दी गई है। बहरे और अंधे आदमी, गैर-यहूदी बहरे आदमी और गैर-यहूदी अंधे आदमी का उपचार, गैर-यहूदियों की समझ आने की क्षमताओं को रेखांकित कर सकता है। बेशक, 15:21 में, साइरेन का शमौन क्रूस उठाता है, जो, मुझे लगता है, मार्क अध्याय 8 में प्रस्तुत शिष्यत्व के मॉडल से जुड़ा हुआ है। और, बेशक, सूबेदार क्रूस पर सर्वोत्कृष्ट स्वीकारोक्ति देता है, कि सूबेदार, जिसके बारे में हम बाद में और बात करेंगे, मार्क के सुसमाचार में पहला इंसान है, अगर आप चाहें तो, बिना किसी सुधार या चुप कराए यीशु को समझने वाला।

तो, हम देखते हैं कि यहूदियों की तरह ही अन्यजातियों की भी एक ज़रूरत है, एक ही ज़रूरत है, एक समान ज़रूरत है, और यीशु भी उन ज़रूरतों का ख्याल रखता है और उनका जवाब देता है। दुख की कहानी से पहले, उल्लेखित सभी अन्यजातियों ने यीशु की करुणा प्राप्त की। हालाँकि वे राजनीतिक या पंथिक रूप से समझे जाने वाले इस्राएल के लिए बाहरी हो सकते हैं, लेकिन वे परमेश्वर के परिवार के लिए बाहरी नहीं हैं।

वह उन्हें ठीक करता है, उन्हें खाना खिलाता है, दुष्टात्माओं को उसी तरह से बाहर निकालता है जैसे वह यहूदियों को करता है। हम मार्क के सुसमाचार में देखते हैं कि यीशु ने यहूदी मातृभूमि में

अन्यजातियों को स्वीकार किया, साथ ही साथ जानबूझकर अन्यजातियों के देशों की यात्रा की। हमने हाल ही में यह देखा।

हालाँकि, हम अवज्ञा भी देखते हैं। तीन मौकों पर, हमें गैर-यहूदियों द्वारा कुछ हद तक अवज्ञा देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए, अध्याय 7 में बहरे आदमी के ठीक होने के बाद, गैर-यहूदी भीड़ ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया कि न बताएँ।

विडंबना यह है कि अपने अविश्वास में, गैर-यहूदी लोग भी किसी तरह की मसीहाई घोषणा करने वाले पहले समूह हैं। वे जो कह रहे हैं और उनकी अवज्ञा के बीच एक अंतर्संबंध है। यहाँ थोड़ी विडंबना है।

अन्यजातियों को एक ऐसे समूह में शामिल किया गया है जिसे व्यभिचारी पीढ़ी कहा जाता है। हम इसे बाद में मार्क के सुसमाचार में देखेंगे। उन्हें 8:12 में यहूदियों के समान स्थिति में रखा गया है। अध्याय 10:42 से 45 में, अन्यजातियों के नेताओं और यीशु के बीच यह विरोधाभास है और शिष्यों के बीच यह तर्क विकसित होता है कि कौन महान होने जा रहा है।

हम ऐसे स्थान भी देखते हैं, जहाँ यीशु ने सभी को डांटा और ऐसा लगता है कि वे सिर्फ यहूदियों को ही नहीं, बल्कि सभी को डांट रहे हैं। बेशक, पिलातुस अंततः विश्वास नहीं करता। यीशु को पीड़ा के समय न्याय के लिए अन्यजातियों को सौंप दिया जाता है।

लोग यीशु से डरे हुए थे, दुष्टात्माओं को भगाने वाले सेनापति यीशु ने उनकी ओर देखा और उन्हें चले जाने को कहा। इसलिए, अन्यजातियों की भूमिका के नकारात्मक पहलू हैं, लेकिन मार्क में नकारात्मक पहलू सकारात्मक पहलुओं की तुलना में फीके हैं।

इसलिए, मुझे लगता है कि मार्क के सुसमाचार में जिस तरह से अन्यजातियों का इस्तेमाल किया गया है, उसमें हम जो एक चीज़ देखते हैं, वह यह है कि आम तौर पर एक सकारात्मक जोर दिया जाता है। मार्क के सुसमाचार की संरचना में अध्याय 5, श्लोक 1-20 में परमेश्वर के राज्य के अन्यजातियों की ओर जाने की शुरुआत का संकेत है, यहाँ तक कि मिशन का यह संकेत भी है जहाँ अब बहाल हुए व्यक्ति को लोगों को बताने का निर्देश दिया जाता है। यह अंततः सेंचुरियन को यह घोषणा करने के लिए प्रेरित करेगा।

आपके पास यह सकारात्मक भावना है। मंदिर की सफाई या शाप में भी, जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे, जब यीशु जवाब देते हैं और नेतृत्व पर यह कहते हुए आरोप लगाते हैं, मेरा घर प्रार्थना का घर होना चाहिए था, लेकिन तुमने इसे चोरों का अड्डा बना दिया है, दिलचस्प बात यह है कि मार्क में, मेरा घर राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर होना चाहिए था। अब, जब हम कुछ अन्य सुसमाचारों को देखते हैं, तो इसमें राष्ट्रों के लिए भाग नहीं है।

यह प्रार्थना के घर पर समाप्त होता है। लेकिन मार्क सुनिश्चित करता है कि हमारे पास पूरा उद्धारण हो, जो राष्ट्रों के लिए है, जो यह दर्शाता है कि वहाँ भी अन्यजातियों का स्वागत और समावेश किया गया है। और इसलिए, मुझे लगता है कि मार्क के सुसमाचार में अन्यजातियों की

प्रतिक्रिया पर सकारात्मक ध्यान दिया गया है, ऐसी स्थिति में नहीं जैसे कि किसी तरह अन्यजाति यहूदी लोगों से बेहतर हैं, बल्कि लगभग एक समानता है।

यहूदी लोगों की तरह ही गैर-यहूदी भी कष्ट भोग रहे हैं। और यीशु यहूदी लोगों के साथ-साथ गैर-यहूदी लोगों के पास भी जा रहे हैं। लेकिन इसमें थोड़ा अंतर यह है कि गैर-यहूदी लोग संदेश के प्रति अधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया दे रहे हैं, जबकि यहूदी नेतृत्व निश्चित रूप से ऐसा नहीं कर रहा था।

और इसलिए, कुछ हद तक, कुत्तों के लिए टुकड़ों की भाषा का उपयोग करने के लिए, यह विचार है कि कुत्ते टुकड़ों के गिरने का इंतजार कर सकते हैं, लेकिन मार्क के सुसमाचार के अंत तक, उन्हें अब बच्चों द्वारा इसे गिराने का इंतजार नहीं करना पड़ता है, बल्कि वे खुद भी बच्चे बन जाते हैं। इसलिए, जब हम मार्क के सुसमाचार और अन्यजातियों को देखते हैं, तो मैं चाहता हूँ कि हम यह ध्यान में रखें कि मार्क के सुसमाचार में अन्यजातियाँ कैसे काम करती हैं। ठीक है, आइए अपने खाते में आगे बढ़ते रहें।

और अब हम अध्याय 5 और श्लोक 21 से 43 तक पहुँचते हैं। यह दिलचस्प है कि यह मार्क के अंतःक्षेपण या मार्केन सैंडविच में से दूसरा है, जहाँ एक कहानी शुरू होती है, और फिर कहानी के उस कथन के बीच में एक दूसरी कहानी होती है जिसे पूरी तरह से बताया जाता है, और फिर पहली कहानी अपने आप समाप्त हो जाती है। अब, यह मार्केन सैंडविच उतना प्रभावशाली नहीं है, जितना कि आप सोचेंगे, यीशु के परिवार और फिर बेलज़ेबुल के साथ विवाद और यीशु के परिवार में वापस आने वाला।

ये स्पष्ट रूप से दो अलग-अलग घटनाएँ हैं। यहाँ, कहानी का सार: आपके पास वह विवरण है जो जैरस की बेटी से शुरू होता है और यीशु के आने और उसकी मदद करने की विनती करता है, और फिर रक्तस्राव विकार वाली महिला की कहानी और फिर जैरस की बेटी की कहानी की वापसी से बाधित होता है। कई मायनों में, यह अभी भी एक कहानी के रूप में कार्य करता है क्योंकि रक्तस्राव विकार वाली महिला के साथ घटनाएँ एक साथ होती हैं, लेकिन अभी भी विभाजित कहानी कहने की यह संरचना है।

दिलचस्प बात यह है कि जब आप यार्इरस की बेटी की कहानी और रक्तस्राव विकार से पीड़ित महिला की कहानी को देखते हैं, तो दोनों में एक समान विषय है। दोनों में आस्था का एक समान विषय शामिल है। 12 साल के समय का एक समान उपयोग है।

महिला 12 साल तक पीड़ित रही। छोटी लड़की 12 साल की है। दोनों ही घटनाएँ महिलाओं से संबंधित हैं।

दोनों में ही अनुष्ठानिक अशुद्धता, महिला का रक्त और रक्तस्राव विकार और लड़की की मृत्यु है। लेकिन एक अंतर भी है। एक समुदाय में यहूदी पुरुष नेता है, एक आराधनालय नेता जो यीशु के पास आता है।

दूसरी एक गरीब महिला है, बहिष्कृत, औपचारिक और अशुद्ध। इसलिए, उनके बीच कुछ दिलचस्प अंतर्क्रियाएँ हैं। जैसा कि हम पढ़ते आए हैं, वैसा पढ़ने के बजाय, मैं कहानी एक से शुरू करने जा रहा हूँ, उस पर चर्चा करूँगा, खून बह रही महिला को देखूँगा, और फिर यार्स की बेटी की कहानी खत्म करूँगा।

इसलिए, जब यीशु फिर से नाव से झील के दूसरी ओर गए, तो हमने देखा कि झील के एक तरफ, वे उस पार चले गए, वहाँ एक तूफान आया, वे दूसरी तरफ पहुँच गए, वहाँ दुष्टात्माओं का एक समूह था, वे चले गए, अब वे वापस झील पार कर गए हैं। जब वे झील के किनारे थे, तो उनके चारों ओर एक बड़ी भीड़ जमा हो गई, और यह फिर से उनकी लोकप्रियता के संदर्भ में हम जो देख रहे हैं, उसके अनुरूप है। फिर, आराधनालय के शासकों में से एक, जैरस वहाँ आया।

यह काफी दिलचस्प है क्योंकि अब तक, एक आराधनालय नेता, एक आराधनालय शासक आराधनालय का प्रशासक था, जो संभवतः यह सुनिश्चित करता था कि पूजा व्यवस्थित हो और आराधनालय के कार्य उचित हों। इस बिंदु तक, धार्मिक नेता बाहरी होने की ओर प्रवृत्त रहे हैं। और यहाँ हमारे पास एक धार्मिक नेता है जो ज़रूरत के लिए उसके पास आ रहा है।

मुझे लगता है कि यह अच्छा है क्योंकि यह भी दर्शाता है कि इस्राएल के सभी नेताओं ने यीशु को अस्वीकार नहीं किया है। यह पूरी तरह से अस्वीकार नहीं किया गया है, लेकिन कुछ लोग अभी भी उसके पास आ रहे हैं। यह यीशु की मान्यता और लोकप्रियता को भी दर्शाता है कि जब वह यहाँ आता है तो वह अद्भुत और अद्भुत चमत्कार करने में सक्षम होता है।

यह भी दिलचस्प है कि चमत्कार की कहानी में किसी व्यक्ति का नाम होना बहुत ही असामान्य बात है। उन चमत्कार की कहानियों के बारे में सोचें जो हमने पहले भी सुनी हैं। आमतौर पर यह घटना की स्थिति के बारे में होता था, कोई नाम नहीं दिया जाता था, लकवाग्रस्त व्यक्ति, अंधा व्यक्ति, बहरा व्यक्ति, इत्यादि।

यहाँ हमें वास्तव में एक व्यक्ति का नाम मिलता है, यार्स। वास्तव में, केवल यहाँ और फिर मार्क 10 में बार्तिमाईस ही एकमात्र समय है जब हमें व्यक्तियों का नाम मिलता है। अब यह, मेरा मतलब है, दो कारणों से हो सकता है।

एक बात यह है कि आप अपने दोस्तों का नाम लेते हैं। इसलिए, दोस्तों के नाम याद रखे जाते हैं। और इसलिए, यह उस व्यक्ति का संकेत हो सकता है जिसे बाद में याद किया गया।

दर्शकों को जैरस या उसके किसी संबंध के बारे में पता होगा। यह घटना की ऐतिहासिकता को भी दर्शाता है, कि यह कोई व्यंग्य नहीं है; यह एक विशिष्ट व्यक्ति है। शायद यह चमत्कार की अद्भुत प्रकृति को भी दर्शाता है जो उसकी बेटी के पुनर्जीवित होने के साथ होने वाला है, जो इतनी अस्थिर घटना थी कि इसमें शामिल व्यक्ति का उल्लेख किए बिना कहानी नहीं बताई जा सकती थी।

फिर भी, यह दिलचस्प है कि हमें नाम का उल्लेख मिलता है। और इसलिए, हमारे पास यह स्थिति है, यीशु को देखकर, वह उनके पैरों पर गिर पड़ा। और फिर, हमें यहाँ सावधान रहने की ज़रूरत है क्योंकि उनके पैरों पर गिरना पूजा का संकेत नहीं है।

यह यहाँ किसी ऐसे व्यक्ति से विनती करने का संकेत देता है जो कुछ ऐसा कर सकता है जो याईर नहीं कर सकता था। तो यहाँ एक आराधनालय का शासक एक ऐसे व्यक्ति के चरणों में विनती कर रहा है जो आराधनालयों में बहुत विवाद पैदा कर रहा है, उसके चरणों में कुछ करने के लिए विनती कर रहा है। यह एक बहुत बड़ी ज़रूरत है।

मेरी छोटी बेटी मर रही है। कृपया आओ और उस पर अपने हाथ रखो ताकि वह ठीक हो जाए और जीवित रहे। इसलिए, यीशु उसके साथ गया।

अब, यहीं से याईर और उसकी बेटी की कहानी शुरू होती है। अब, यह कहानी बीच में ही रुक जाती है। हमें एक घटना मिलती है जो इस कहानी के बीच में इस खून बह रही महिला के साथ होती है।

अब, एक बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे चल रही थी और उसके चारों ओर इकट्ठा हो गई थी। और वहाँ एक महिला थी, जो 12 साल से रक्तस्राव से पीड़ित थी, कई डॉक्टरों की देखरेख में बहुत कष्ट झेल चुकी थी और अपना सब कुछ खर्च कर चुकी थी। फिर भी, ठीक होने के बजाय, उसकी हालत और खराब होती गई।

तो, हमारे पास इस महिला की यह तस्वीर है, जो इस हालत में है, और यह बहुत दयनीय है। एक तो यह कि उसे लगातार रक्तस्राव हो रहा है। हालाँकि विशेष रूप से इसका उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन यह माना जाता है कि यह स्थिति संभवतः मासिक धर्म के रक्तस्राव के कारण हुई होगी, जिससे वह औपचारिक रूप से अशुद्ध भी हो गई होगी।

वह धार्मिक जीवन में भाग लेने में असमर्थ होती। उसकी गरीबी जगजाहिर है। यह बताता है कि उसने अपना सब कुछ इस पर कैसे खर्च कर दिया।

प्रकृति इसे पुनःस्थापित करने के लिए बेताब थी, और उसका हर पैसा इसे हल करने की कोशिश में खर्च किया गया। और फिर भी, कोई मानवीय सफलता नहीं मिली है। मेरा मतलब है, इस सेटिंग में से एक में, कोई भी मानव चिकित्सक ऐसा नहीं था जो इसे पुनःस्थापित करने में सक्षम था।

वास्तव में, उसकी स्थिति बदतर होती जा रही थी। यह अक्सर कहा जाता रहा है, और मुझे यह मनोरंजक लगता है कि मैं यहाँ आपके साथ साझा करूँगा, कि जब ल्यूक यह कहानी बताता है, तो ल्यूक डॉक्टरों के कुछ करने में असमर्थ होने का उल्लेख नहीं करता है। और कुछ लोगों ने हमेशा मज़ाक किया है कि शायद ल्यूक अपने पेशे को नीचा नहीं दिखाना चाहता।

फिर भी, हम देखते हैं कि मार्क हमें स्पष्ट रूप से बताता है कि उसने दूसरों से मदद मांगी है जो इस क्षेत्र के कथित विशेषज्ञ थे और उसे कोई राहत नहीं मिल पाई। और इसलिए यहाँ, यह महिला

जो औपचारिक रूप से अशुद्ध है, जो गरीब है, जो एक बाहरी व्यक्ति होगी, अगर आप कहें, तो कई मायनों में, वंचित। और जब उसने यीशु के बारे में सुना, तो वह भीड़ में उसके पीछे आ गई और उसके कपड़े को छू लिया।

क्योंकि उसने सोचा, अगर मैं उसके कपड़ों को छू लूं, तो मैं ठीक हो जाऊंगी। अब, हमने इस बारे में बात की है, कि कपड़ों को छूकर ठीक होने का यह विचार कोई असामान्य विचार या अंधविश्वास नहीं है, और यह कि किसी तरह शक्ति उपलब्ध होगी और किसी तरह कपड़ों में समाहित हो जाएगी। हम इसे प्रेरित पौलुस और उसके रूमाल, और प्रेरितों के काम, पतरस और उसकी छाया के साथ देखते हैं।

और इसलिए, वह कहती है, मैं छूना चाहती हूँ क्योंकि उसका मानना है कि अगर वह लबादा छू लेगी, तो वह ठीक हो जाएगी। और तुरंत, उसका खून बहना बंद हो गया, और उसने अपने शरीर में महसूस किया कि वह अपनी पीड़ा से मुक्त हो गई है। यहाँ एक दिलचस्प विवरण है।

तो, मार्क के सुसमाचार में अन्य चमत्कारों की तरह, इसमें भी एक तात्कालिकता है। उसे 12 साल से खून बह रहा था। कोई भी खून बहना रोक नहीं सका।

अब वह यीशु के लबादे को छूती है। वह तुरंत पूरी तरह स्वस्थ हो जाती है। अब, एक अंतर यह है कि अन्य विवरणों में, अन्य चमत्कारों में, और यहाँ तक कि जैरस की तरह, व्यक्ति यीशु के पास आया है और उसने अपनी चिंता जाहिर की है, अपनी ज़रूरत बताई है, और अपने विश्वास के प्रति एक मज़बूत प्रतिक्रिया दी है, लकवाग्रस्त व्यक्ति को नीचे उतारने के लिए छत को अलग किया है, और इसी तरह।

उसने अपनी स्थिति के बारे में यीशु को नहीं बताया है। वह सिर्फ उपचार के लिए यीशु के पास गई है। और इसलिए, मुझे लगता है कि इससे यह समझने में मदद मिलती है कि आगे क्या होता है।

यीशु को तुरंत एहसास हुआ कि उसके लिए शक्ति समाप्त हो गई है; वह भीड़ में मुड़ा और पूछा, मेरे कपड़े किसने छुए? शिष्यों को, बेशक, यह सवाल बेतुका लगा क्योंकि उन्होंने कहा, क्या तुम नहीं देखते कि लोग तुम्हारे खिलाफ भीड़ लगा रहे हैं, और फिर भी तुम पूछ सकते हो कि मुझे किसने छुआ? हर कोई तुम्हें छू रहा है, यीशु। तुम्हारा क्या मतलब है, किसने छुआ? लेकिन यीशु इधर-उधर देखते रहे कि यह किसने किया है। अब, मार्क के सुसमाचार में यीशु के बारे में जो कुछ हम पहले से जानते हैं, उसे देखते हुए, मुझे लगता है कि यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु के पास विचारों को समझने की शक्ति है।

हम जानते हैं कि यीशु के पास दिलों पर परमेश्वर का दृष्टिकोण है। इसलिए, यहाँ चित्र, फिर, मुझे नहीं लगता कि यीशु को यह प्रश्न पूछते हुए और चारों ओर देखते हुए देखना चाहिए क्योंकि उसे नहीं पता कि अभी क्या हुआ है, और वह उत्तर चाहता है क्योंकि वह भी उतना ही हैरान है जितना कोई और है। मुझे लगता है कि इसका अर्थ यह है कि उसने उस पल को रोक दिया है, और अब

एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जो इस महिला को अपने विश्वास का मज़बूत प्रदर्शन करने के लिए मजबूर करेगी।

फिर उस स्त्री को पता चला कि उसके साथ क्या हुआ था, वह उसके पास आई और उसके पैरों पर गिर पड़ी। ध्यान दें कि यह अब भी कैसे होता है, कितनी बार हमने लोगों को यीशु के पैरों पर गिरते देखा है। यहाँ एक मान्यता प्राप्त अधिकार है।

डर से कांपते हुए उसके पैरों पर गिर पड़े। एक बार फिर, डर। नाव पर बैठे शिष्यों से हमें डर का सामना करना पड़ा।

हमें उन लोगों से डर लगता है जिन्होंने देखा कि राक्षसी सेना के साथ क्या हुआ था, और अब हमें इस महिला से भी डर लगता है। यहाँ डर स्पष्ट रूप से पुराने नियम के डर के इस विचार की स्थिति में है, सही और उचित विस्मय और प्रतिक्रिया और एक ऐसी शक्ति की उपस्थिति जो मानवीय क्षेत्र में समझ में नहीं आती है, जो केवल दिव्य में समझ में आती है। इसलिए, उसे डर है और उसने उसे पूरी सच्चाई बताई।

संभवतः पूरा सच सिर्फ़ उसके लक्षण और उसके साथ कितने समय से ये लक्षण हैं, यह नहीं है, बल्कि यह भी है कि वह यीशु को क्यों छूना चाहती थी। शायद यह उसकी अशुद्धता की स्थिति के कारण था कि वह यीशु को अपनी उपस्थिति के बारे में बताना भी नहीं चाहती थी; वह यह तथ्य बताना नहीं चाहती थी कि वह उसे छूने की कोशिश करने जा रही है, क्योंकि वह अशुद्धता कभी भी पवित्रता को दूषित नहीं करती। हमने देखा कि कोढ़ी और स्वच्छता की औपचारिक समझ के विचार के साथ अगर किसी को किसी अशुद्ध चीज़ ने छू लिया, तो वह अशुद्ध हो गया और फिर उसे अनुष्ठान के ज़रिए बहाल करना पड़ा।

तो शायद वहाँ भी कुछ चिंता थी। बेशक, कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्ति और रक्तस्राव विकार से पीड़ित महिला की तरह, यह यीशु की पवित्रता है जो अधिक मजबूत है, न कि अशुद्धता। इसलिए वह पूरी कहानी बताती है, और वह उससे कहता है, बेटी।

अब यह एकमात्र स्थान है जहाँ यीशु ने सुसमाचार में किसी को बेटी कहकर संबोधित किया है। यह एक बहुत ही कोमल कथन है, जैसा कि वह मार्क 2 में लकवाग्रस्त व्यक्ति से कहता है जहाँ वह उसे बेटा कहता है। और इस प्रकार एक पारिवारिक अंतरंगता, एक पारिवारिक अंतरंगता है।

याद कीजिए जब यीशु के परिवार ने सोचा कि यीशु पागल है और वे उसे रोकने की कोशिश कर रहे थे कि वह क्या कर रहा है? यीशु ने कहा, यहाँ मेरी माताएँ और मेरी बेटियाँ और मेरे भाई हैं, और वह लोगों को देखता है, जो कोई भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करता है। और इसलिए यहाँ इस महिला ने जो कुछ किया है, उसके बीच एक संबंध है, न केवल स्पर्श करने के लिए, बल्कि यह भी बताने के लिए कि उसने उसे क्यों छुआ, ऐसा क्यों हुआ, और उसने पूरी कहानी बताई, जिसका जवाब उसने यह कहकर दिया, अब तुम मेरे परिवार की हो, बहुत कोमलता से। और, ज़ाहिर है, यहाँ जैरस के साथ एक अंतर्क्रिया भी है।

याईर अपनी बेटी के बारे में चिंता के कारण आया था। और यहाँ कहानी के बीच में, यीशु इस महिला को बेटी कह रहे हैं। तो फिर यह हिस्सा हुआ है, मार्क और सैंडविच में यह मांस, अगर आप चाहें, और वह कहता है, आपके विश्वास ने आपको ठीक कर दिया है।

शांति से जाओ और अपने दुखों से मुक्त हो जाओ, शांति से जाने का यह विचार। अब तुम सही रिश्ते में हो और अब बाहर नहीं हो। फिर, जब यीशु अभी भी बोल रहा था, आराधनालय के शासक याईर के घर से कुछ लोग वापस आए और कहा, तुम्हारी बेटी मर गई है।

तो जैरस वहाँ गया था। मैं शायद उत्सुकता से ऐसा करना चाहता हूँ, क्योंकि अब यह देरी हो गई है। आपकी बेटी मर चुकी है।

शिक्षक को और परेशान क्यों करना? उनकी बातों को अनदेखा करते हुए, यीशु ने आराधनालय के शासक से कहा, डरो मत। दिलचस्प है। अपने डर से मत हारो।

बस विश्वास करो। हालाँकि, यहाँ डर का मतलब ईश्वरीय भय न होना नहीं है, बल्कि मानवीय भय न होना है। और नाव में बैठे शिष्यों की घबराहट के बारे में न सोचना मुश्किल है, जो परिस्थितियों के कारण डरे हुए थे।

उन्होंने जो गलत किया वह यह था कि वे डर गए और यीशु को जगा दिया। उन्होंने भरोसा नहीं किया, उन्होंने विश्वास नहीं किया। इस क्षण में, जो मार्क मुझे लगता है कि जुड़ रहा है, हमें यह देखना है, कि यीशु याईर से कहते हैं, मानवीय भय मत रखो, विश्वास रखो।

भरोसा रखें कि चूँकि मैं आपकी बेटी के पास आने के लिए सहमत हो गया हूँ, इसलिए मेरे आने का कारण, आपकी समस्या का समाधान, अभी तक परिस्थितियों द्वारा छीना नहीं गया है। इसलिए तूफ़ान की कहानी में, यीशु ने कहा कि वह दूसरी तरफ़ जाना चाहता है। तूफ़ान आता है, शिष्य घबरा जाते हैं।

वह उन्हें उनकी घबराहट के लिए डांटता है। उन्होंने यीशु की कही बात पर भरोसा क्यों नहीं किया कि वह दूसरी तरफ़ जाना चाहता है, कि वह वहाँ पहुँच जाएगा? यीशु ने याईर से कहा था, मैं तुम्हारे साथ तुम्हारी बेटी के पास जाऊँगा। चिंता मत करो, मैंने कहा है कि मैं वहाँ जाऊँगा।

मैं वहाँ पहुँचूँगा। डरो मत। बस विश्वास करो। तो, मानवीय भय और विश्वास के बीच एक अंतर्संबंध है, मेरा मानना है कि विश्वास ईश्वरीय भय से जुड़ा हुआ है।

मानवीय भय, आस्था/ईश्वरीय भय है। उसने पीटर, जेम्स और जेम्स के भाई जॉन को छोड़कर किसी को भी अपने पीछे आने नहीं दिया। यह पहली बार है जब तीन लोगों का यह विशेष समूह अलग हुआ है।

तो, हमारे पास चार भाई, दो भाई, एंड्रयू, पीटर, जेम्स, जॉन और फिर बारह थे, लेकिन यह पहली बार है कि हम पीटर, जेम्स और जॉन को देखते हैं, जबकि एंड्रयू को इस घटना को देखने की अनुमति नहीं दी गई है, जो मार्क में सबसे महान चमत्कारों में से एक होने जा रहा है। जब वे वहाँ

पहुँचे, तो यीशु ने आराधनालय के शासक के घर को देखा; उन्होंने लोगों को रोते और जोर से विलाप करते हुए देखा, जो शोक का संकेत था। इसकी ज़ोरदार आवाज़ यह भी संकेत दे सकती है कि वहाँ बहुत कुछ था।

बेशक, इस संस्कृति में, जब कोई मर जाता था, तो शोक मनाने वालों का एक पेशेवर समूह होता था जिसे आप बुलाते थे और जो आपके साथ शोक मनाता था। यही उनका पेशा था। मुझे नहीं लगता कि यह कोई जोड़-तोड़ वाला पेशा है।

यह उस पल के समुदाय का हिस्सा बनने जैसा था। इसलिए, यहाँ जो शोक मनाने वाले लोग हैं, उनमें से कुछ परिवार को जानते होंगे, अन्य लोगों को शायद मृत्यु पर शोक मनाने के लिए पैसे दिए गए होंगे। इसलिए, हम उनके साथ हैं और यहाँ बहुत हंगामा और रोना-धोना हो रहा है।

फिर से, यह माहौल तूफ़ान जैसा ही लगता है, यह बेकाबू स्थिति। यीशु कहते हैं, यह सब हंगामा और रोना-धोना क्यों है? बच्ची मरी नहीं है, बल्कि सो रही है। कुछ लोगों ने सोचा है, क्या यीशु कह रहे हैं कि वह कोमा में है? तकनीकी रूप से वह सही हैं।

ज़्यादा संभावना यह है कि यह नींद नींद और मौत के संदर्भ में खेल रही है, नींद अक्सर मौत का रूपक होती है। इसलिए, मुझे लगता है कि यीशु कह रहे हैं कि वह मर चुकी है, लेकिन ऐसी स्थिति में नहीं है कि यीशु उसे जगा न सकें। इसलिए, मुझे लगता है कि यहाँ कुछ ऐसा हो रहा है जो परस्पर क्रिया है।

मुझे नहीं लगता कि लड़की वास्तव में सो रही है, लेकिन क्या बच्चा इस अर्थ में मरा नहीं है कि उसे ठीक नहीं किया जा सकता। मुझे लगता है कि यही विचार है। और जब उसने उन सभी को डाल दिया, तो बेशक, बच्चा मरा नहीं था, और वे उस पर हंसे।

ध्यान दें कि यह समूह रोने, विलाप करने और शोक मनाने से लेकर हंसने तक चला जाता है। मुझे लगता है कि भावनाओं में यह तत्काल बदलाव यह भी संकेत दे सकता है कि वे वास्तव में शोक नहीं मना रहे थे, बल्कि उन्हें पैसे देकर शोक मनाया जा रहा था। और इसलिए उनमें ऐसा भावनात्मक बदलाव हो सकता है।

और मुझे आश्चर्य है कि क्या यीशु को जो मज़ाक मिलेगा, उसका कुछ पूर्वाभास नहीं है जो उसकी अपनी मृत्यु से जुड़ा हुआ है। और यहाँ, मृत्यु पर अपनी शक्ति के बारे में बात करने पर उसका मज़ाक उड़ाया जाता है, यह लड़की। और जब उसने उन्हें बाहर निकाल दिया, तो उसने बच्चे के पिता और माँ और उसके साथ मौजूद तीन शिष्यों को लिया, और जहाँ बच्चा था, वहाँ गया।

उसने उसका हाथ पकड़ा और उससे कहा, और हमें अरामी भाषा मिली। हम आम तौर पर अरामी भाषा नहीं सीखते, लेकिन हमें अरामी भाषा मिलती है, तलिथा कुम, जिसका मतलब है, छोटी लड़की, मैं तुमसे कहता हूँ, उठो। वास्तव में, इसका मतलब लगभग छोटा मेमना है, मैं तुमसे कहता हूँ, उठो।

लेकिन छोटी भेड़ का बच्चा अक्सर एक छोटी लड़की के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक प्यारा नाम था, एक अंतरंग बयान। और तुरंत लड़की खड़ी हो गई, इधर-उधर घूमने लगी। वह 12 साल की थी।

महिला को 12 साल से रक्तस्राव हो रहा था। यह लड़की 12 साल की थी। महिला के साथ संबंध के बारे में सोचा गया, 12 साल की उम्र में, उस संस्कृति के दौरान वह समय होता था जब आप शादी या परिवार बनाने के लिए विचार करना शुरू कर देते थे।

और इसलिए अब वह 12 साल की उम्र में जन्म देने, जीवित रहने, परिवार बनाने और उसका आनंद लेने की क्षमता वापस पा चुकी है। महिला को 12 साल तक मासिक धर्म होता रहा था, और अब वह भी वापस आ गया है, और शायद, इसके बीच भी ऐसा ही संबंध है। और फिर, इस पर, वे पूरी तरह से चकित थे।

उन्होंने सख्त आदेश दिए, जो मुझे लगता है कि इस साल का एक छोटा सा कथन है। उन्होंने सख्त आदेश दिए कि किसी को भी इस बारे में पता न चले, और उसे कुछ खाने को देने के लिए कहा। यह सोचना लगभग पागलपन जैसा लगता है कि यहाँ एक लड़की थी जो मर चुकी थी, अब जीवित है, और यीशु लोगों से कह रहे हैं कि वे किसी को न बताएं।

फिर से, मुझे लगता है कि यह दो तरह से हो सकता है, शायद यीशु का हिस्सा, फिर से, उस उत्साह को कम करने की कोशिश कर रहा है जो परिणाम दे सकता है। शायद निर्देशों का मतलब यह है कि किसी को यह न बताया जाए कि यह वास्तव में कैसे हुआ, पुनर्स्थापना। मैं इस बारे में निश्चित नहीं हूँ।

मैं जानता हूँ कि, हालाँकि, इसके साथ, मार्क एक साहित्यिक तनाव पैदा करता है। इसलिए, वह हमेशा से यही कहता आया है कि जब कुछ होता है, तो किसी को मत बताना। जब कुछ होता है, तो किसी को मत बताना।

और यहाँ किसी को न बताने का सबसे बेतुका उदाहरण लगता है। यहाँ एक मृत व्यक्ति जीवित हो गया है। साहित्यिक दृष्टिकोण से, लगभग यही सवाल है कि किसी को बताना कब ठीक है। यीशु क्या कर रहे हैं, इस बारे में हम कब चुप नहीं रह सकते? या शायद बेहतर तरीके से कहें, हमें कब सही समझ होगी कि यीशु कौन हैं, ताकि हम बता सकें? और इस बिंदु पर, उत्तर यह होगा कि केवल यह जानना पर्याप्त नहीं है कि उसने इस लड़की को पुनर्जीवित किया, उसे अब मृत्यु से जीवन में वापस लाया।

फिर से, मैं जो मानता हूँ, उस पर आगे बढ़ते हुए, शताधिपति का कबूलनामा होगा। अब, यह भी है, यह याद रखना मुश्किल है कि इस पूरी प्रक्रिया के दौरान, उसके चमत्कार पतन के प्रभावों के बारे में बात कर रहे हैं, बीमारी, हाथ की बहाली, राक्षसी कब्जे, और अब पतन के अंतिम परिणाम को पूर्ववत् किया जा रहा है। जो मृत्यु और उसके उस पहलू के रूप में होगा।

तो, हम एक ऐसे अधिकारी से बात कर रहे हैं जो किसी भी अन्य अधिकारी से अलग है, एक ऐसा अधिकारी जो पतन को पलट सकता है। और निश्चित रूप से, यहाँ मौजूद तीनों ने इसे देखा है, भले ही अन्य लोगों ने नहीं देखा हो। अब, यह दिलचस्प है।

तो, हम यहाँ मार्क अध्याय 5 से मार्क अध्याय 2 और अध्याय 6 में आगे बढ़ते हैं। और हम अभी अध्याय 6 में ही पहुँचेंगे। लेकिन, पहले छह छंदों में, और यही वह सीमा होगी जिस पर हम नज़र डालेंगे, यीशु ने उनके प्रति यह शानदार प्रतिक्रिया दी है। एक महान चमत्कारी कार्यकर्ता और एक शिक्षक के रूप में यीशु की बहुत बड़ी स्वीकृति रही है। उनके पीछे चलने की चाह रखने वाले दुष्टात्माओं का विश्वास रहा है।

बीमार लोगों का विश्वास रहा है, जो आने की कोशिश कर रहे थे, और उनके विश्वास ने उन्हें ठीक किया है। आपके विश्वास के कारण, आपके पाप क्षमा हो जाते हैं। फिर से, हमें यह मजबूत, काल्पनिक प्रतिक्रिया मिल रही है।

और फिर अध्याय 6 के साथ, शायद यह आता है, कहानी थोड़ी सी धरती पर वापस आती है, अगर आप चाहें, जैसा कि एक टिप्पणीकार ने कहा। एक अलग प्रतिक्रिया है। इस श्रृंखला की ओर बढ़ते हुए, हमने, निश्चित रूप से, तूफानों और लीजन को शांत किया है, एक महिला को ठीक किया है, और एक लड़की को वापस जीवन में लाया है।

लेकिन यहाँ हमें कुछ और मिलता है, और यह यीशु के गृहनगर में होता है। जब यीशु वहाँ से चले गए, पद 1, अपने शिष्यों के साथ अपने गृहनगर गए। जब सब्त का दिन आया, तो उन्होंने आराधनालय में उपदेश देना शुरू किया, और बहुत से लोगों ने उन्हें सुनकर आश्चर्यचकित हुए।

यह अपने आप में उससे अलग नहीं है जो हमने पहले देखा है। बेशक, यीशु का गृहनगर नाज़रेथ है। नाज़रेथ एक छोटा सा गाँव है, जिसका उल्लेख पुराने नियम में नहीं है।

जॉन, अध्याय 1, श्लोक 46 में नतनएल कहता है, क्या नासरत से कुछ अच्छा आ सकता है? यह एक तिरस्कारपूर्ण कथन है। हम नासरत के बारे में सिर्फ़ इसलिए जानते हैं क्योंकि यीशु वहाँ से हैं। इसलिए, वह अपने गृहनगर लौट आया है।

उनका गृहनगर बेथलेहम नहीं है। बेथलेहम वह जगह है जहाँ उनका जन्म हुआ। नाज़रेथ वह जगह है जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ।

और वह अपने गृहनगर लौटता है, और हम मार्क के सुसमाचार से अध्याय 6 में यह जानने के लिए तैयार हैं कि यह एक अनुकूल स्वागत नहीं हो सकता है। याद रखें, यीशु जो कर रहा है, उसके कारण उसके परिवार को पहले से ही परेशानी और कठिनाई का सामना करना पड़ा है। हम यह पहले से जानते हैं।

लेकिन इस तरह से यह बात शुरू होती है। वह पढ़ा रहा है। वे उसकी शिक्षा पर आश्चर्यचकित हैं।

वह इसे एक आराधनालय में कर रहा है, जो कि कफरनहूम में दिन के अध्याय 1 की शुरुआत की याद दिलाता है। हमें एक सवाल मिलता है: इस आदमी को ये चीजें कहां से मिलीं? उसकी शिक्षा के बारे में बात करते हुए। उसे यह कौन सी बुद्धि दी गई है कि वह चमत्कार भी करता है? वहाँ के सवाल कफरनहूम के आराधनालय में पूछे गए सवालों की तरह लगते हैं, अध्याय 1, कौन ऐसा है, और वह इतने अधिकार के साथ सिखाता है कि दुष्टात्माएँ भी उसकी आज्ञा मानती हैं।

वे चकित हैं। यह बुद्धि कहाँ से आ रही है? वह चमत्कार भी करता है। बिलकुल वैसा ही।

लेकिन फिर सवाल थोड़े नकारात्मक हो जाते हैं। क्या यह बढ़ई नहीं है? क्या यह मरियम का बेटा नहीं है? याकूब, यूसुफ, यहूदा और शमौन का भाई नहीं है? क्या उसकी बहन यहाँ हमारे साथ नहीं हैं? और वे उससे नाराज़ हो गईं। इसलिए, यहाँ अंतिम दो सवाल इस बारे में नहीं हैं कि वह क्या करने में सक्षम है, बल्कि वे उसके स्थानीय मूल को देखना शुरू करते हैं।

उनके पारिवारिक सम्बन्धियों पर ज़ोर दिया गया है: मरियम, भाई याकूब, यूसुफ, यहूदा और शमौन। याकूब का उल्लेख सबसे पहले किया गया है।

सबसे अधिक संभावना है कि वह सबसे बूढ़ा है, और इसीलिए उसका उल्लेख सबसे पहले किया गया है। काफी दिलचस्प बात यह है कि, जिसके बारे में हमने पहले बात की थी, जेम्स चर्च में एक वरिष्ठ नेता बन जाएगा। यहाँ उसे एक नकारात्मक के रूप में जोड़ा जा रहा है, लेकिन हम जानते हैं कि वह जी उठे यीशु को देखेगा और वह नए नियम की पुस्तकों में से एक लिखने के लिए प्रेरित होगा।

यहूदा के साथ भी ऐसा ही है। यहूदा 1 खुद को याकूब का भाई बताता है। लेकिन इन सवालों से यह विचार शुरू होता है कि वह यह स्वीकार करने में असमर्थ है कि यीशु, जो कि एक बढ़ई का बेटा था, कैसे हुआ।

यह दिलचस्प है कि यूसुफ का नाम लेकर उल्लेख नहीं किया गया है। मरियम का नाम लेकर उल्लेख किया गया है। सबसे अधिक संभावना है, यह संकेत दे सकता है कि समय का एक बड़ा हिस्सा बीत चुका है, शायद यूसुफ की मृत्यु के साथ, और यीशु को मुख्य रूप से मरियम के साथ ही पाला गया था।

नया नियम यूसुफ के जन्म और बचपन के बारे में बहुत चुप है। लेकिन वैसे भी, ये सवाल बेतुके हैं। वे अपमानजनक हैं।

इस शहर के लोग इस बात से उत्साहित होने के बजाय कि उनका अपना कोई व्यक्ति ये अद्भुत काम कर रहा है, लगभग इस बात को स्वीकार करने में असमर्थता की स्थिति में आ जाते हैं कि उनका अपना कोई व्यक्ति ऐसी बातें कहने की हिम्मत कैसे कर सकता है। यह बिलकुल वैसा ही है जैसा कि उनके परिवार ने पहले मार्क के सुसमाचार में कहा था। और फिर यीशु जवाब देते हैं।

यीशु ने उनसे कहा, केवल अपने गृहनगर में, अपने रिश्तेदारों के बीच, अपने घर में, एक नबी सम्मान के बिना रहता है। अब इस कथन का कुछ संस्करण प्राचीन दुनिया भर में बहुत आम है।

दार्शनिक इसका उपयोग इस बारे में बात करने के लिए भी करते हैं कि कैसे इन महान वक्ताओं और विचारकों को हर कोई प्यार करता है, सिवाय उन लोगों के जिनसे वे आते हैं।

अब, यीशु यहाँ खुद को एक भविष्यवक्ता के रूप में पहचानते हैं; हमें इस बारे में यह नहीं सोचना चाहिए कि यीशु ने समझा कि वह वास्तव में कौन था या नहीं, बल्कि वास्तव में, पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के इतिहास के संदर्भ में यह है कि उन्हें उनके अपने लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया था। कि उन्हें लगातार अस्वीकार किया जाता है। और यह, ज़ाहिर है, इस तथ्य से भी अधिक हो जाएगा कि यीशु को न केवल उसके गृहनगर और उसके रिश्तेदारों और उसके अपने घर, शहर और उसके घर द्वारा अस्वीकार कर दिया जाएगा, बल्कि सामान्य रूप से उसके लोगों द्वारा भी अस्वीकार कर दिया जाएगा।

और फिर आपके पास यह बहुत जटिल कथन है। वह वहाँ कुछ बीमार लोगों पर हाथ रखकर उन्हें ठीक करने के अलावा कोई चमत्कार नहीं कर सका। वह उनके विश्वास की कमी पर आश्चर्यचकित था।

चमत्कार करने में असमर्थता के बारे में मार्क का कथन थोड़ा और स्पष्ट हो जाता है जब मैथ्यू इसे थोड़ा और स्पष्ट करता है कि यह क्षमता की कमी के कारण नहीं बल्कि पसंद के कारण है। और मुझे लगता है कि मार्क में यही अर्थ है, मार्क हमें बता रहा है कि यीशु के चमत्कार विश्वास की प्रतिक्रिया हैं। और वे विश्वास को उत्तेजित करते हैं।

उन्हें विश्वास के प्रदर्शन की आवश्यकता है। वे किसी ऐसे व्यक्ति से संबंधित हैं जो यीशु के बारे में बयान दे रहा है या उनका मानना है कि यीशु क्या कर सकता है। और यहाँ नासरत शहर यीशु को अस्वीकार कर रहा है।

मेरा मतलब है, इसमें विडंबना है। क्या इसमें विडंबना नहीं है? सिवाय इसके कि कुछ बीमार लोगों पर हाथ रखकर उन्हें ठीक कर दिया जाए। कुछ बीमार लोगों पर हाथ रखकर उन्हें ठीक करना अब इस मामले में एक निम्न स्तर है।

यह एक महान कार्य होना चाहिए था, लेकिन यहाँ, मार्क इसे प्रस्तुत करता है: ये कुछ आश्चर्यजनक कार्य जो यीशु विश्वास के जवाब में करेंगे, वे नहीं करेंगे। नासरत के लोगों का अविश्वास, दूसरे शब्दों में, याईरस, रक्तस्राव विकार से पीड़ित महिला और मार्क में अन्य सभी पात्रों के विपरीत है जो मदद के लिए यीशु के पास आए हैं। यह शायद नासरत के लोगों की इस बात की अज्ञानता को भी दर्शाता है कि उन्हें यीशु की सख्त ज़रूरत थी।

यीशु के चमत्कार, बेशक, कभी भी केवल उनकी शक्ति का प्रदर्शन नहीं थे, बल्कि विश्वास उत्पन्न करने और उसका जवाब देने के लिए उनकी योजना का एक हिस्सा थे। यहाँ विषय यह है कि नासरत की अस्वीकृति काफी मजबूत और काफी निश्चित थी। यह हमें अध्याय छह की शुरुआत में ले जाता है।

जब हम फिर मिलेंगे, तो हम यीशु की सार्वजनिक सेवकाई के विस्तार में अध्याय छह पर काम करना जारी रखेंगे।

यह डॉ. मार्क जेनिंग्स द्वारा मार्क के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 10 है, मार्क 5:21-6:6, जैरस की बेटी, घर पर अस्वीकृति।